प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 28 * APR 2009 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	1 mp.3	*39*				भ० का सर्वश्रेष्ठ नाम ओंकार का स्वरूप एवं स्वर-व्यंजन में विस्तार, निनि०-ससा० वाचक - मा०उ० संक्षेप में	*1*
2	2 mp.3	*45*				ओंकार-उत्पत्ति विस्तार लय एवं स्वरूप क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ, त्रिगुणात्मक प्रकृति का विस्तार ही संसार	*2*
3	3 mp.3	38				मुक्तिकोपनिषद में भ०राम का हनुमानजी को अपने नि०नि० स्वरूप का उपदेश माण्डूक्य उ० - मंत्र	मा०१
4	4 mp.3	43				मा०उ० ओंकार भ० का सर्वश्रेष्ठ नाम है, दृश्य प्रकृति मेरा रूप है एवं मेरा द्रष्टा राम है	मा०२
5	5 mp.3	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
6	6 mp.3	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
7	7 mp.3	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
8	8 mp.3	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
9	9 mp.3	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
10	10 mp.3	43				अ०रा०/रा०हृ०-भ०राम का निनि०, सच्चि० स्वरूप निरूपण वह देश काल वस्तु से अतीत हैं	
11	11 mp.3	35				ईश्वर-जीव भेद, चतुर्वर्ण सृष्टिक्रम, अर्जुन-विषाद योग ही जीव का सारा जीवन है, ज्ञान से ही मुक्ति	
12	12 mp.3	*52*				राम का निनि०स्वरूप निरूपण वे सबकी आत्मा अद्वितीय ज्ञानगम्य चैतन्य परम् अन्तर्ज्योति है	Imp
13	13 mp.3	*36*				नारायण ईश्वर जीव निरूपण ज्ञान चिदाभास को होता है चिदाभास की ७ अवस्थाऐं	Imp
14	14 mp.3	42				राम का निनि० स्वरूप निरूपण,परमात्मा-आत्मा ब्र० है अनात्मा या चिदाभास में ही बन्ध मोक्ष	PQ
15	15 mp.3	32				जगत सीताराम का ही स्वरूप है, कार्य कारण से अभिन्न होता है, जीव चेतन व जगत जड़ है	
16	16 mp.3	27				गीता अ०२ आरम्भ/१-६, अर्जुन के मोहवश युद्ध न करने पर भ० से प्रताणना व चेतावनी	गी०१
17	17 mp.3	43				आनंद रामायण-मनोहरकाण्ड श्रीराम जयराम जयजयराम व्याख्या राम पुरुष, सीता छाया हैं	
18	18 mp.3	25				अर्जुन-विषादयोग भगवान का विराट रूप प्रदर्शन,अर्जुन को युद्ध की प्रेरणा, ज्ञानोपदेश आरंभ	गी०२
19	19 mp.3	*45*				चार कृपाऐं-ईश्वर वेद गुरु आत्म, ईश्वर कृपा - नर शरीर की महिमा ज्ञानाग्नि शुभाशुभ कर्म नाशक	Imp
20	20 mp.3	31				गीता २/११, भगवान के अवतार का प्रयोजन ज्ञानोपदेश, साधु रक्षा एवं दुष्टों का दलन	
21	21 mp.3	*47*				परम एवं शब्दब्रह्म-ओंकार-त्रि०वेद से मल विक्षेप आवरण का नाश और प० ब्रह्म प्राप्ति	*A*
22	22 mp.3	50				परम एवं शब्दब्रह्म-ओंकार-त्रि०वेद वर्णाश्रम अनुसार विशेष एवं सामान्य धर्म	*B*
23	23 mp.3	*33*				गीता २/१३-१६,सत् ब्रह्म सदैव है जा०स्व०सु० तीनों काल में नहीं, निद्रा-मन-प्रकृति ही माया है	गी०३
24	24 mp.3	46				गीता-भागवत में त्रि० वेद का ही उपदेश, तीनों काण्ड में क्रम समुच्चय, निष्कामकर्म-नवधाभक्ति निरूपण	
25	25 mp.3	*33*				गीता २/१६, सत् सदा है असत् कभी नहीं है जा०-स्व० निद्राकृत भ्रम हैं, द्रष्टा आत्मा सदैव है V.Good	गी०४
26	26 mp.3	49				परम एवं शब्द ब्रह्म-ओंकार-त्रि०वेद ई०-वेद-आत्म कृपा महिमा, नवधा भक्ति निरूपण	*C*
27	27 mp.3	*32*				गीता २/१६, सत् सदा है असत् कभी नहीं है ब्रह्म-माया द्रष्टा-दृश्य बस दो ही पदार्थ हैं	गी०५
28	28 mp.3	*48*				परम एवं शब्दब्रह्म-ओंकार-त्रि०वेद मल विक्षेप आवरण-प्रतिबन्ध,कथा श्रवण ही उपाय,न०भ०	*D*
29	29 mp.3	*36*				गीता २/१६-१८, द्रष्टा सत्-चित-आनंद व दृश्य असत्-जड़-दुःखरूप माया, अज्ञान का कार्य है	गी०६
30	30 mp.3	*44*				मोक्ष साधन - त्रि०वेद कर्म-उपासना-ज्ञान विवेक वैराग्य षट्कसंपदा मुमुक्षुता सहित गुरु शरण	*E*
31	31 mp.3	35				गीता २/१८, जागृत भी स्वप्नवत् मिथ्या है,सभी देह नाशवान हैं देही/आत्मा सत्य व अप्रमेय है	गी०७
32	32 mp.3	*53*				गुरु प्रणिपाति उपरान्त गुरु द्वारा ब्रह्म ज्ञान ब्रह्मोपनिषद-सृष्टिक्रम, जीव-ईश्वर का लक्ष्यार्थ	*F*
33	33 mp.3	*34*				गीता २/१६-१८, देह देही दो ही पदार्थ हैं संसार में ५ अंश हैं - अस्ति भाति प्रिय ब्रह्म का स्वरूप है एवं नाम रूप माया है माया रचित देह अंत वाली है नाम रूप जगत का आधार - अधिष्ठान ब्रह्म ही सत्य है, अर्जुन उसे ही तू अपना स्वरूप जान ।	गी०८